अलंकार भाग – 1 (काव्यप्रकाश)

प्रस्तोता – अरुण पाण्डेय

निदर्शना

लक्षण - निदर्शना अभवनवस्तुसंबन्ध उपमापरिकल्पकः ||

जहाँ पर वस्तुओं का असम्भव अथवा अनुपपद्यमान सम्बन्ध उपमा का परिकल्पक होता है वहाँ निदर्शना अलंकार होता है। निदर्शना अर्थात् दृष्टान्त देना। निदर्शना अलंकार के ३ भेद होते हैं –

१. वाक्यार्थनिदर्शना-

क्व सूर्यप्रभवो वंशः क्व चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम् ||

✓ कहाँ सूर्य प्रभु का वंश और कहाँ अल्पविषयों को जानने वाली मेरी मति , मैं तो एक छोटी सी नौका से सागर को तरना चाह रहा हूँ।

उपरोक्त रघुवंश महाकाव्य के पद्य में पूर्वार्ध और उत्तरार्ध रूपी वाक्यार्थों का उपमान उपमेय भाव है अतः वाक्यार्थ निदर्शना अलंकार है। यहां पर उडुप के द्वारा सागर के तरण की तरह मेरी मति से रघुवंश का वर्णन है इस उपमा की परिकल्पना है।

२. पदार्थनिदर्शना –

उदयति विततोर्ध्वरश्मिरज्जावहिमरुचौ हिमधाम्नि याति चास्तम्।
वहति गिरिरयं विलम्बिघण्टाद्वयपरिवारितवारणेन्द्रलीलाम्॥

✓उस समय(पूर्णिमा में)जब कि अपनी- अपनी रश्मि-रज्जुओं को दूर ऊपर तक फैलाये सूर्य तो उदित हो रहा हो और चन्द्र अस्त, यह (रैवतक) पर्वत ऐसा लगता है कि दोनो ओर लम्बे लटकने वाले दो घण्टों से सुशोभित किसी गजराज की शोभा को धारण कर रहा हो।

उपरोक्त उदाहरण में एक पदार्थ वारणेन्द्रलीला द्वितीय पदार्थ रैवतकपर्वत से असम्बद्ध होकर भी उपमा परिकल्पक है अतः पदार्थ निदर्शना है।

३. मालानिदर्शना –

दोर्भ्यां तितीर्षति तरङ्गवतीभुजङ्ग-
मादातुमिच्छति करे हरिणाङ्कबिम्बम्।
मेरुं लिलङ्घयिषति ध्रुवमेष देव
यस्ते गुणान् गदितुमुद्यममादधाति॥

हे महाराज ! जो व्यक्ति आपके गुणों का वर्णन करना चाहता है निश्चित ही वह सागर को हाथों से तैरना , चन्द्र को हाथ में लेना और मेरु पर्वत लांघ कर पार कर जाना चाहता है। यहां एक ही वाक्य सभी वाक्यों से असम्बद्ध होकर उपमा परिकल्पक है।

अर्थान्तरन्यास

लक्षण - सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येणेतरेण वा ॥

✓जहां पर साधर्म्य अथवा वैधर्म्य से सामान्य का विशेष के द्वारा समर्थन किया जाता है अथवा विशेष का सामान्य के द्वारा समर्थन किया जाता है वहां अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है। यह ४ प्रकार का होता है –

१ – विशेष के द्वारा सामान्य का साधर्म्य से समर्थन।
२ – सामान्य के द्वारा विशेष का साधर्म्य से समर्थन।
३ – विशेष के द्वारा सामान्य का वैधर्म्य से समर्थन।
४ – सामान्य के द्वारा विशेष का वैधर्म्य से समर्थन।

१ – विशेष के द्वारा सामान्य का साधर्म्य से समर्थन।

उदाहरण - निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम्।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम् ॥

- जिनका स्वयं का मन दोष से आवृत्त रहता है ऐसे लोगों को अत्यन्त सुन्दर वस्तु भी विपरीत लगती है। पित्त (पीलिया) रोग से ग्रस्त व्यक्ति चन्द्र की तरह शुभ्र (सफेद) शंख को भी पीला देखता है । निर्दिष्ट उदाहरण में निजदोषावृतमनसाम् अतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम् इस **सामान्य का** पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतं पश्यति इस **विशेष के द्वारा साधर्म्य से समर्थन** है।

२ – सामान्य के द्वारा विशेष का साधर्म्य से समर्थन।

सुसितवसनालंकारायां कदाचन कौमुदी-
महसि सुदृशि स्वैरं यान्त्यां गतोऽस्तमभूद्विधुः।
तदनु भवतः कीर्तिः केनाप्यगीयत येन सा
प्रियगृहमगान्मुक्ताशङ्का क्व नासि शुभप्रदः ॥

✓महाराज ! कभी ऐसा हुआ कि चाँदनी के छिटकते ही कोई अभिसारिका उज्ज्वल सफेद वस्त्र आभूषणों से सज कर अभिसार के लिये निकली और मार्ग में ही चाँद डूब गया , किन्तु जैसे ही किसी ने आपकी कीर्ति का गान किया वह नायिका निःशङ्क होकर प्रियतम के घर चली गई भला आप कहाँ शुभप्रद नही हो ? यहां पर **विशेष**(सुसितवसना..) **का सामान्य** (क्व नासि शुभप्रदः) **के द्वारा साधर्म्य से समर्थन है।**

३ – विशेष के द्वारा सामान्य का वैधर्म्य से समर्थन।

गुणानामेव दौरात्म्यात् धुरि धुर्यो नियुज्यते।

असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति गौर्गलिः ॥

- गुणों के ही दुष्टता के कारण भारवहन करने योग्य बैल कार्य में नियुक्त होता है , जिसमें गुण नही है ऐसा पतनशील (गलि) बैल तो सुखपूर्वक सोता है उसके कन्धे पर कोई चिन्ह नही होता। यहां पर धुर्यः गुणानामेव दौरात्म्यात् धुरि नियुज्यते इस **सामान्य का** गौर्गलिः असंजातकिणस्कन्धः सुखं स्वपिति इस **विशेष के द्वारा वैधर्म्य से समर्थन** है।

४ – सामान्य के द्वारा विशेष का वैधर्म्य से समर्थन।

अहो हि मे बह्वपराद्धमायुषा यदप्रियं वाच्यमिदं मयेदृशम्।

त एव धन्याः सुहृदः पराभवं जगत्यदृष्ट्वैव हि ये क्षयं गताः ॥

- ओह् यह मेरे दीर्घजीवी होने का ही पाप है कि ऐसी अप्रिय बात मुझे ही कहनी पडी सचमुच वे ही लोग धन्य हैं जो इस संसार में अपने मित्र का दुःख देखने के पहले ही मर चुके होते हैं। यहाँ "त एव धन्याः" इत्यादि रूप **सामान्य विषय के द्वारा** "अहो हि मे बह्वपराद्धमायुषा" इत्यादि रूप एक **विशेष विषय का समर्थन** किया जा रहा है। यहाँ जो समर्थन हेतु है वह **वैधर्म्य** रूप है।

दृष्टान्त

लक्षण -दृष्टान्तः पुनरेतेषां सर्वेषां प्रतिबिम्बनम् ॥

✓दृष्टान्त वह अलंकार है जिसमें उपमेयवाक्य और उपमानवाक्य दोनों वाक्यों में इन सब (उपमान , उपमेय और साधारणधर्म) का बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव झलकता है। दृष्टान्त अलंकार २ प्रकार का होता है।

१- साधर्म्य से दृष्टान्त -

त्वयि दृष्ट एव तस्या निर्वाति मनो मनोभवज्वलितम्।
आलोके हि हिमांसोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्याः ॥

✓काम संतप्त उस (नायिका) का मन तुम्हारे दर्शन मात्र से शान्त हो जाता है जैसे चन्द्र को देखने मात्र से कुमुदिनी का पुष्प विकसित हो जाता है। उपरोक्त उदाहरण नायक-चन्द्र, नायिका-कुमुदिनी, मन -

कुसुम, मनोभवसन्तप्त-सूर्यकिरणदग्ध तथा प्रसन्नता-विकास में बिम्बप्रतिबिम्ब भाव झलकता है। तथा “आलोके हि हिमांशोर्विकसति कुसुमं कुमुद्वत्या:” रूपी दृष्टान्त कथन भी है।

२ – वैधर्म्य से दृष्टान्त -

तवाहवे साहसकर्मशर्मण: करं कृपाणान्तिकमानिनीषत:।
भटा: परेषां विशरारुतामगु:, दधत्यवाते स्थिरतां हि पांसव: ॥

✓ महाराज ! जब युद्धभूमि में साहसिक कर्मों से ही सन्तुष्ट होने वाले आप अपना हाथ अपनी तलवार के पास ले जाना चाहते हैं तब शत्रुओं की सेना भाग खडी होती है क्योंकि वायु के न बहने पर ही तो धूलिकण इधर उधर नही उडा करते । यहां “अवाते पांसव: स्थिरतां दधति यह दृष्टान्त वैधर्म्य से कहा गया है।

विभावना

लक्षण - क्रियायाः प्रतिषेधेऽपि फलव्यक्तिर्विभावना ॥

- ✓ हेतु रूप क्रिया का निषेध होने पर भी उसका फल दिखाई पडे तो विभावना होती है। तात्पर्य है विना किसी हेतु(कारण) के कार्य का उत्पन्न हो जाना विभावना है। जैसे -

कुसुमितलताभिरहताप्यधत्त रुजमलिकुलैरदष्टापि।

परिवर्तते स्म नलिनीलहरीभिरलोलिताप्यघूर्णत सा ॥

- ✓ वह विरहिणी कुसुमित लता की चोट के बिना ही पीडित होती रही, भ्रमरों के काटने के बिना ही लोट-पोट जाती रही, और नलिनी पत्र की मन्द लहरियों (पवनों) के बिना ही चकरा जाती रही। उपरोक्त उदाहरण में कारण के बिना ही तीन अलग अलग फल दिख रहे हैं अतः विभावना है।

विशेषोक्ति

लक्षण - विशेषोक्तिरखण्डेषु कारणेषु फलावचः।

✓बहुत सारे कारण हों फिर भी कार्य न हो तो विशेषोक्ति होती है। यह ३ प्रकार की होती है - अनुक्तनिमित्ता, उक्तनिमित्ता और अचिन्त्यनिमित्ता।

१. अनुक्तनिमित्ता विशेषोक्ति

निद्रानिवृत्तावुदिते द्युरत्ने सखीजने द्वारपदं पराप्ते।
श्लथीकृताश्लेषरसे भुजङ्गे चचाल नालिङ्गनतोऽङ्गना सा ॥

✓निद्रा पूर्ण हो गई, सूर्य का उदय हो गया, द्वार पर सखियां आ गई, प्रेमी नें अपने आपको शिथिल कर दिया फिर भी वह अंगना आलिंगन से विचलित नहीं हुई। यहां प्रेमाधिक्य रूप निमित्त नहीं कहा गया है अतः अनुक्तनिमित्ता है।

२. उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति -

कर्पूर इव दग्धोऽपि शक्तिमान् यो जने जने।
नमोऽस्त्ववार्यवीर्याय तस्मै मकरकेतवे ॥

✓उस अकुण्ठित शक्ति वाले कामदेव को नमस्कार है जो कपूर की तरह जल जाने पर भी सर्वत्र जन-जन में अपनी शक्ति से व्याप्त है। यहां पर कामदेव की शक्ति के नाश होने का उसका शरीरदाहरूपी कारण है फिर भी वह शक्तिमान है यह कथन है और उसका निमित्त "अवार्यवीर्यता" का कथन भी किया गया है अतः उक्तनिमित्ता विशेषोक्ति है।

३. अचिन्त्यनिमित्ता विशेषोक्ति -

स एकस्त्रीणि जयति जगन्ति कुसुमायुधः।
हरतापि तनुं यस्य शंभुना न बलं हृतम् ॥

✓तीनों लोकों में वह अकेला कुसुमायुध (कामदेव) जीता करता है जिसके शरीर का नाश करने वाले शिव जी ने बल का नाश नही किया। यहां बलनाश का कारण शरीर नाश है फिर भी बलनाशरूपी फल नहीं कहा गया है तथा इस विशेषोक्ति का निमित्त अचिन्त्य है। अतः यह अचिन्त्यनिमित्ता विशेषोक्ति है।

धन्यवाद